

विषय — आत्मा

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 4 : 24

"परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।"

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो 8 : 1-9

- ¹ सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- ² क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
- ³ क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
- ⁴ इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।
- ⁵ क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
- ⁶ शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
- ⁷ क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
- ⁸ और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।
- ⁹ परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 20 : 1-6

- ¹ तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहे,
- ² कि मैं तेरा परमेश्वर यहीवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है॥

- 3 तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥
- 4 तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी कि प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।
- 5 तू उन को दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ,
- 6 और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा किया करता हूँ॥

2. 2 राजा 2 : 1-15 (से 1st .)

- 1 जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था, तब एलिय्याह और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल से चले।
- 2 एलिय्याह ने एलीशा से कहा, यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिये तू यहीं ठहरा रह। एलीशा ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; इसलिये वे बेतेल को चले गए।
- 3 और बेतेलवासी भविष्यद्वक्ताओं के चले एलीशा के पास आकर कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है? उसने कहा, हां, मुझे भी यह मालूम है, तुम चुप रहो।
- 4 और एलिय्याह ने उस से कहा, हे एलीशा, यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है; इसलिये तू यहीं ठहरा रह: उसने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे यरीहो को आए।
- 5 और यरीहोवासी भविष्यद्वक्ताओं के चले एलीशा के पास आकर कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है? उसने उत्तर दिया, हां मुझे भी मालूम है, तुम चुप रहो।
- 6 फिर एलिय्याह ने उस से कहा, यहोवा मुझे यरदन तक भेजता है, सो तू यहीं ठहरा रह; उसने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे दोनों आगे चले।
- 7 और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से पचास जन जा कर उनके साम्हने दूर खड़े हुए, और वे दोनों यरदन के तीर खड़े हुए।
- 8 तब एलिय्याह ने अपनी चदर पकड़ कर ऐंठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पार उतर गए।
- 9 उनके पार पहुंचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा, उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिये जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं वह मांग; एलीशा ने कहा, तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।
- 10 एलिय्याह ने कहा, तू ने कठिन बात मांगी है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा।
- 11 वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्नि मय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन को अलग अलग किया, और एलिय्याह बवंडर में हो कर स्वर्ग पर चढ़ गया।
- 12 और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो! जब वह उसको फिर देख न पड़ा, तब उसने अपने वस्त्र पाड़े और फाड़कर दो भाग कर दिए।
- 13 फिर उसने एलिय्याह की चदर उठाई जो उस पर से गिरी थी, और वह लौट गया, और यरदन के तीर पर खड़ा हुआ।

- ¹⁴ और उसने एलिय्याह की वह चढ़र जो उस पर से गिरी थी, पकड़ कर जल पर मारी और कहा, एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है? जब उसने जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया।
- ¹⁵ उसे देखकर भविष्यद्वक्ताओं के चेले जो यरीहो में उसके साम्हने थे, कहने लगे, एलिय्याह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है; सो वे उस से मिलने को आए और उसके साम्हने भूमि तक झुक कर दण्डवत की।

3. यशायाह 59 : 21

- ²¹ और यहोवा यह कहता है, जो वाचा मैं ने उन से बान्धी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैं ने तेरे मुंह में डाले हैं अब से ले कर सर्वदा तक वे मेरे मुंह से, और, तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी कभी न हटेंगे॥

4. गलातियों 5 : 16-23, 25

- ¹⁶ पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
- ¹⁷ क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।
- ¹⁸ और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के आधीन न रहे।
- ¹⁹ शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन।
- ²⁰ मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म।
- ²¹ डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के जैसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।
- ²² पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज।
- ²³ और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।
- ²⁵ यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

5. गलातियों 6 : 7, 8, 16

- ⁷ धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।
- ⁸ क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।
- ¹⁶ और जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्त्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 467 : 3 (वह)-7

इस विज्ञान की पहली मांग है, "दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥" यह "मैं" आत्मा है। इसलिए आज्ञा का यह अर्थ है: आपके पास कोई बुद्धि नहीं है, कोई जीवन नहीं है, कोई पदार्थ नहीं है, कोई सत्य नहीं है, कोई प्रेम नहीं है, इसके अलावा जो आध्यात्मिक है।

2. 63 : 5 (मैं)-11

विज्ञान में मनुष्य आत्मा की संतान है। सुंदर, अच्छा और शुद्ध उसके वंश का गठन करते हैं। उसका मूल, नश्वर की तरह, पाशविक वृत्ति में नहीं है, और न ही वह बुद्धि तक पहुँचने से पहले भौतिक परिस्थितियों से गुजरता है। आत्मा उसका मूल और होने का परम स्रोत है; परमेश्वर उसका पिता है, और जीवन उसके होने का नियम है।

3. 139 : 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

4. 83 : 12-25

विज्ञान में चमत्कार असंभव है, और यहां विज्ञान लोकप्रिय धर्मों के साथ मुद्दा उठाता है। शक्ति की वैज्ञानिक अभिव्यक्ति ईश्वरीय प्रकृति से है और अलौकिक नहीं है, क्योंकि विज्ञान प्रकृति की व्याख्या है। यह विश्वास कि ब्रह्माण्ड, जिसमें मनुष्य भी शामिल है, सामान्यतः भौतिक नियमों द्वारा संचालित होता है, लेकिन कभी-कभी आत्मा इन नियमों को दरकिनार कर देती है - यह विश्वास सर्वशक्तिमान ज्ञान को कमतर आंकता है, तथा पदार्थ को आत्मा पर वरीयता देता है।

यह मानना क्रिश्चियन साइंस के विपरीत है कि जीवन या तो भौतिक है या जैविक रूप से आध्यात्मिक है। ईसाई विज्ञान और सभी प्रकार के अंधविश्वासों के बीच एक बड़ी खाई स्थापित है; और यह खाई उतनी ही दुर्गम है जितनी कि धनवान व्यक्ति और लाजरस के बीच की खाई।

5. 84 : 3-13

प्राचीन पैगंबरों ने आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी दूरदर्शिता हासिल की, दृष्टिकोण को शामिल किया, न कि बुराई और गलत तथ्य को दूर करने से दूर किया, — भविष्य की निष्ठा और मानवीय विश्वास के आधार पर भविष्य की भविष्यवाणी करना। जब विज्ञान में पर्याप्त रूप से उन्नत होने की सच्चाई के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता है, तो पुरुष अनैच्छिक रूप से द्रष्टा और भविष्यद्वक्ता बन जाते हैं, जो राक्षसों, आत्माओं, या लोकतंत्रों द्वारा नियंत्रित नहीं होते हैं, लेकिन एक आत्मा द्वारा। यह वर्तमान, दिव्य मन का विचार है, और विचार का जो इस मन के साथ संबंध में है, अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानने के लिए।

6. 284 : 28-14

क्रिश्चियन साइंस के अनुसार, मनुष्य की एकमात्र वास्तविक भावना आध्यात्मिक है, जो दिव्य मन से निकलती है। विचार ईश्वर से मनुष्य की ओर जाता है, लेकिन न तो संवेदना और न ही रिपोर्ट भौतिक शरीर से मन तक जाती है। अंतर्मन हमेशा ईश्वर से लेकर उसके विचार, मनुष्य तक होता है।

पदार्थ संवेदनशील नहीं है और उसे अच्छे या बुरे, सुख या दुःख का ज्ञान नहीं हो सकता। मनुष्य का व्यक्तित्व भौतिक नहीं है। अस्तित्व का यह विज्ञान केवल इसके बाद ही नहीं, जिसे लोग स्वर्ग कहते हैं, प्राप्त करता है, बल्कि यहीं और अभी प्राप्त करता है; यह समय और अनंत काल तक अस्तित्व का महान तथ्य है।

तो फिर, वह भौतिक व्यक्तित्व क्या है जो भोगता है, पाप करता है और मर जाता है? यह मनुष्य नहीं है, परमेश्वर की छवि और समानता है, बल्कि मनुष्य की नकली, उलटी समानता, पाप, बीमारी और मृत्यु नामक विषमता है। दावे की असत्यता कि एक नश्वर भगवान की सच्ची छवि है आत्मा और पदार्थ, मन और शरीर के विपरीत संकेत द्वारा सचित्र है, क्योंकि एक बुद्धि है, जबकि दूसरा गैर-बुद्धि है।

7. 282 : 3-17

वास्तविक जीवन या मन, तथा इसके विपरीत, तथाकथित भौतिक जीवन और मन, दो ज्यामितीय प्रतीकों द्वारा दर्शाए गए हैं - एक वृत्त या गोला और एक सीधी रेखा। वृत्त उस अनंत को दर्शाता है जिसका कोई आरंभ या अंत नहीं है; सीधी रेखा उस परिमित को दर्शाती है जिसका आरंभ और अंत दोनों हैं। गोला अच्छाई, स्वयं-अस्तित्व और शाश्वत व्यक्तित्व या मन का प्रतिनिधित्व करता है; सीधी रेखा बुराई, स्वयं-निर्मित और अस्थायी भौतिक अस्तित्व में विश्वास का प्रतिनिधित्व करती है। शाश्वत मन और अस्थायी भौतिक अस्तित्व कभी भी आकृति या तथ्य में एक नहीं होते।

एक सीधी रेखा को वक्र में कोई स्थायी स्थान नहीं मिलता, और एक वक्र को सीधी रेखा में कोई समायोजन नहीं मिलता। इसी प्रकार, आत्मा में पदार्थ का कोई स्थान नहीं है, और आत्मा का पदार्थ में कोई स्थान नहीं है।

8. 265 : 3-15

मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

9. 295 : 19-24

नश्वर मन जिसके माध्यम से सत्य सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, वह है जिसने सत्य के लिए एक बेहतर पारदर्शिता बनने के लिए बहुत अधिक भौतिकता - बहुत त्रुटि - खो दी है। फिर, जैसे बादल पिघलकर पतले वाष्प में बदल जाता है, यह अब सूर्य को नहीं छिपाता है।

10. 425 : 23-28

चेतना एक बेहतर शरीर का निर्माण करती है जब सामग्री में विश्वास की जीत हुई है। आध्यात्मिक समझ से भौतिक विश्वास को ठीक करें, और आत्मा आपको नए सिरे से बनाएगी। आप फिर से ईश्वर को नाराज करने के अलावा कभी नहीं डरेंगे, और आप कभी भी यह विश्वास नहीं करेंगे कि हृदय या शरीर का कोई भी हिस्सा आपको नष्ट कर सकता है।

11. 280 : 4-6, 25-6

प्रेम से और प्रकाश और सद्भाव से जो आत्मा के निवास हैं, केवल अच्छे के प्रतिबिंब आ सकते हैं।

ठीक से समझा, एक भावुक सामग्री के रूप में रखने के बजाय, मनुष्य के पास एक संवेदनाहीन शरीर है; और ईश्वर, मनुष्य की आत्मा और सभी अस्तित्व की, अपने स्वयं के व्यक्तित्व, सद्भाव, और अमरता में सदा रहने वाले, मनुष्य में इन गुणों को लागू करते हैं, - मन के माध्यम से, कोई बात नहीं। मानवीय मतों का मनोरंजन करने और विज्ञान होने को अस्वीकार करने का एकमात्र बहाना हमारी आत्मा का नश्वर अज्ञान है, - अज्ञान जो केवल दिव्य विज्ञान की समझ के लिए उपजता है, वह समझ जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर सत्य के राज्य में प्रवेश करते हैं और सीखते हैं कि आत्मा अनंत और सर्वोच्च। आत्मा और सामग्री प्रकाश और अंधेरे से अधिक नहीं है। जब एक प्रकट होता है, तो दूसरा गायब हो जाता है।

12. 283 : 1-3

जैसे-जैसे मनुष्य आत्मा को समझने लगते हैं, वे यह विश्वास छोड़ देते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई सच्चा अस्तित्व है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6